— मध्यकाल में भक्ति एवं सूफी आंदोलन —

भक्ति आंदोलन —

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन बौद्धिकता के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में प्रारम्भ हुआ और इस आंदोलन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है —

(i) प्रथम चरण में भागवत् गीता से प्रारम्भ होकर 13वीं शताब्दी तक चला जबकि इस्लाम इस देश में पूरी तरह फैल चुका था।

(ii) 13 से 16 वीं सदी माना जाता है जिस समय हिन्दू धर्म और इस्लाम के पारस्परिक सम्पर्क के कारण अत्यधिक बौद्धिक उथल पुथल का युग प्रारम्भ हुआ।

आन्दोलन की पृष्ठभूमि शंकराचार्य ने शुरू की जिन्होंने अद्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया। और जन्म मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए ज्ञान भक्ति मार्ग को अपनाया। वे वेदांत और उपनिषद के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने ज्ञान पर अत्यधिक बल दिया। प्रेम और दया का उनके दर्शन में कोई स्थान नहीं था इसलिए साधारण जनता ने उनके विचारों का स्वागत नहीं किया। उन्होंने ब्रह्मा के सम्बन्ध में एकेश्वरवाद का सिद्धान्त दिया। अद्वैतवाद के अनुसार संसार ~~माया~~ से ईश्वर अपरिवर्तनीय, निराकार और सत्य है। उनके सिद्धान्त में भक्ति का कोई स्थान नहीं था अपितु ज्ञान की प्राथमिकता थी।

12 वीं शताब्दी में रामानुजाचार्य ने वैष्णव सम्प्रदाय की शिक्षाओं को एक दार्शनिक आधार दिया। तथा भक्ति के लिए मार्ग प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने ब्रह्मसूत्र में शंकराचार्य के अद्वैतवाद का खण्डन किया। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म के स्थान पर सगुण ब्रह्म की कल्पना की।

Scanned with CamScanner

परन्तु सम्भवतः रामानुज ने भक्ति मार्ग उच्च वर्ग के लिए निर्धारित किया था। उनके अनुसार ईश्वर और जगत में वही सम्बन्ध है जो प्रकाश और प्रभा वस्तुओं में है।

भारतीय इतिहास में तेरहवीं सदी हिंदू सभ्यता का अंधकार युग माना जाता है। रामानन्द ने हिंदू कर्मकाण्ड का खण्डन किया एवं उनके भक्तों ने भक्ति का प्रचार जनसाधारण की भावना के अनुसार किया। उनके समय में भक्ति आन्दोलन काफी लोकप्रिय रूप ले चुका था।

रामानन्द एवं उनके शिष्यों की शिक्षाओं ने दो भिन्न सम्प्रदायों को जन्म दिया।

रढ़िवादी सम्प्रदाय - नाभादास तुलसीदास जो सगुण भक्ति के उपासक थे।

नव सम्प्रदाय - कबीर, रैदास, नानक आदि - इन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन किया, जातिवाद का खण्डन किया तथा वेदों की प्रामाणिकता पर भी संदेह व्यक्त किया।

Scanned with CamScanner